Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: VI A

नाम : _____

सामूहिक कविता पाठ

मान लेना वसंत आ गया (डी. के. निवातियाँ)

बागो में जब बहार आने लगे
कोयल अपना गीत सुनाने लगे
कलियों में निखार छाने लगे
भँवरे जब उन पर मंडराने लगे
मान लेना वसंत आ गया... रंग बसंती छा गया !!
खेतो में फसल पकने लगे
खेत खलिहान लहलाने लगे
डाली पे फूल मुस्काने लगे
चारो और खुशबु फैलाने लगे
मान लेना वसंत आ गया... रंग बसंती छा गया !!
आमो पे बौर जब आने लगे।
पुष्प मधु से भर जाने लगे
भीनी भीनी सुगंध आने लगे
तितलियाँ उनपे मंडराने लगे
मान लेना वसंत आ गया... रंग बसंती छा गया !!

सरसो पे पीले पुष्प दिखने लगे
वृक्षों में नई कॉपले खिलने लगे
प्रकृति सौंदर्य छटा बिखरने लगे
वायु भी सुहानी जब बहने लगे
मान लेना वसंत आ गया... रंग बसंती छा गया !!
धूप जब मीठी लगने लगे
सर्दी कुछ कम लगने लगे
मौसम में बहार आने लगे
ऋतु दिल को लुभाने लगे
मान लेना वसंत आ गया... रंग बसंती छा गया !!
चाँद भी जब खिड़की से झाकने लगे।
चुनरी सितारों की झिलमिलाने लगे
योवन जब फाग गीत गुनगुनाने लगे
चेहरों पर रंग अबीर गुलाल छाने लगे
मान लेना वसंत आ गया... रंग बसंती छा गया !!

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: VIB

DATE:_____ NAME:_____

सामूहिक कविता पाठ

चिड़िया की आँख

"चलो कुमारों, बाण उठाओ-

प्रत्यंचा पर तीर चढ़ाओ,

एक-एक कर, बारी-बारी-

आज परीक्षा होगी तुम्हारी!"

" जो आज्ञा गुरुवर'

बोले सभी कुमार,

कौरव, पांडु- पुत्रों की परीक्षा,

ले रहे गुरु द्रोणाचार |

“ सामने वृक्ष पर काठ की चिड़िया-

बैठी है उस शाख होगा

श्रेष्ठ धनुर्धर वो ही-

जो भेदेगा उसकी आँख । "

"बस, इतनी सी बात ?

अभी लो" - कह कौरव मुस्काए,

गुरु बोले- " अक्ष भेदन करे वही-

जो 'क्या दीख रहा' सही बताए।"

एक-एक कर बोले कौरव-

"गुरुवर! दीख रहा महल, सरोवर और बगीचा,

निश्चय ही माली ने,

बड़े जतन से इसको सींचा! "

" रख दो धनुष नीचे,

तुमने खो दी अपनी बारी,

पांडु पुत्र ! कमान चढ़ाओ-

क्या पूरी है सब तैयारी?"

"जी गुरुवर! पर पहले हम,

दृश्य सुनाते हैं"-

युधिष्ठिर को चिड़िया,

नकुल सहदेव को फूल

और भीम को फल नज़र आते हैं।

" तुम भी रख दो तीर-

अंतहीन प्रशिक्षण का कैसा सार?

कोई नहीं है ध्यानमग्न,

निराश हुए गुरु द्रोणाचार।"

मौन खड़े अर्जुन ने

तब गुरु चरणों में किया प्रणाम,

"मुझे दीखती सिर्फ़

चिड़िया की आँख,

लक्ष्य भेदना मेरा काम ! "

कह अर्जुन ने तीर उठाया,

मन अपना एकाग्र करा,

एक तीर से अक्ष भेद कर-

अपने गुरु का मान धरा ---2

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: VI C

नाम : _____

~सामूहिक कविता पाठ~

अरमान

कवि - पं. रामनरेश त्रिपाठी

है शौक यही, अरमान यही, हम कुछ करके दिखलाएँगे।
मरने वाली दुनिया में हम, अमरों में नाम लिखाएँगे।

जो लोग गरीब भिखारी हैं, जिनपर न किसी की छाया है।
हम उनको गले लगाएँगे, हम उनको सुखी बनाएँगे।

है शौक यही, अरमान यही, हम कुछ करके दिखलाएँगे।

जो लोग अँधेरे घर में हैं, अपनी ही नहीं नज़र में हैं।
हम उनके कोने-कोने में, उद्यम का दीप जलाएँगे।

है शौक यही, अरमान यही, हम कुछ करके दिखलाएँगे।

जो लोग हारकर बैठे हैं, उम्मीद मारकर बैठे हैं।
हम उनके बुझे दिमागों में, फिर से उत्साह जगाएँगे।

है शौक यही, अरमान यही, हम कुछ करके दिखलाएँगे।

रोको मत, आगे बढ़ने दो, आज़ादी के दीवाने हैं।

हम मातृभूमि की सेवा में, अपना सर्वस्व लगाएँगे।

है शौक यही, अरमान यही, हम कुछ करके दिखलाएँगे।

हम उन वीरों के बच्चे हैं, जो धुन के पक्के सच्चे थे।

हम उनका मान बढ़ाएँगे हम जग में नाम कमाएँगे।

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: VI CI

नाम : _____

सामूहिक~कविता पाठ~

शहीदों में तू नाम लिखा ले रे! / गोपालप्रसाद व्यास

वह देश, देश क्या है, जिसमें
लेते हों जन्म शहीद नहीं।
वह खाक जवानी है जिसमें
मर मिटने की उम्मीद नहीं।

वह मां बेकार सपूती है,
जिसने कायर सुत जाया है।
वह पूत, पूत क्या है जिसने
माता का दूध लजाया है।

सुख पाया तो इतरा जाना,
दुःख पाया तो कुम्हला जाना।
यह भी क्या कोई जीवन है:
पैदा होना, फिर मर जाना!

पैदा हो तो फिर ऐसा हो,
जैसे तांत्या बलवान हुआ।
मरना हो तो फिर ऐसे मर,
ज्यों भगतसिंह कुर्बान हुआ।

जीना हो तो वह ठान ठान,
जो कुंवरसिंह ने ठानी थी।
या जीवन पाकर अमर हुई
जैसे झांसी की रानी थी।

यदि कुछ भी तुझ में जीवन है,
तो बात याद कर राणा की।
दिल्ली के शाह बहादुर की
और कानपूर के नाना की।

तू बात याद कर मेरठ की,
मत भूल अवध की घातों को।
कर सत्तावन के दिवस याद,
मत भूल गदर की बातों को।

आज़ादी के परवानों ने जब
खूं से होली खेली थी।
माता के मुक्त कराने को
सीने पर गोली झेली थी।

तोपों पर पीठ बंधाई थी,
पेड़ों पर फांसी खाई थी।
पर उन दीवानों के मुख पर
रत्ती-भर शिकन न आई थी।

वे भी घर के उजियारे थे
अपनी माता के बारे थे।
बहनों के बंधु दुलारे थे,
अपनी पत्नी के प्यारे थे।

पर आदर्शों की खातिर जो
भर अपने जी में जोम गए।
भारतमाता की मुक्ति हेतु,
अपने शरीर को होम गए।

कर याद कि तू भी उनका ही
वंशज है, भारतवासी है।
यह जननी, जन्म-भूमि अब भी,
कुछ बलिदानों की प्यासी है।

अंग्रेज गए जैसे-तैसे,
लेकिन अंग्रेजी बाकी है।
उनके बुत छाती पर बैठे,
ज़हनियत अभी वह बाकी है।

कर याद कि जो भी शोषक है
उसको ही तुझे मिटाना है।
ले समझ कि जो अन्यायी है
आसन से उसे हटाना है।

ऐसा करने में भले प्राण
जाते हों तेरे, जाने दे।
अपने अंगों की रक्त-माल
मानवता पर चढ़ जाने दे।

तू जिन्दा हो और जन्म-भूमि
बन्दी हो तो धिक्कार तुझे।
भोजन जलते अंगार तुझे,
पानी है विष की धार तुझे।

जीवन-यौवन की गंगा में
तू भी कुछ पुण्य कमा ले रे!
मिल जाए अगर सौभाग्य
शहीदों में तू नाम लिखा ले रे!